अभय-वाणी

मत डर

श्री श्री १००८ महात्मा
श्रीसीतारामदास ओंकारनाथजी
हुगली, बंगाल।

'ईश्वर प्राप्ति'—कार्यालय—
श्रीहरिनिकुञ्ज, वृन्दावन
(मथुरा) उ० प्र०

न्यौछावर ३० पैसे

अभय-वाणी

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

[१]

मत डर

प्यारे ! मुझमें सम्भव-असम्भव की कुछ भी कल्पना न कर । मैं कमल-नाल से हाथी बाँध सकता हूँ, गोष्पद में पर्वत डुबा सकता हूँ । मेरी गति का निर्णय कर सके, ऐसी शक्ति किसी में भी नहीं है । तू देह-चिन्ता, अर्थ-चिन्ता—सबका त्याग कर । मैंने उसकी व्यवस्था कर दी है । पुकार, मुझे पुकार, तेरी सब ज्वालायें दूर होंगी । मत डर, मत डर, मत डर !

तू नाम ले——जब तक स्थिर नहीं हो पाता, तब तक नाम ले । तेरे पैरों के नीचे से पृथ्वी खिसक जाय, सिर पर आकाश टूट पड़े अथवा तेरा सर्वनाश ही क्यों न हो जाय, तू किसी ओर न देखकर दिन-रात नाम ले । तू यह निश्चित जान——तू मेरी गोद में है, मैं तुझे छाती से लगा कर तेरी रक्षा कर रहा हूँ । नाम ले—नाम ले ।

सर्वे नश्यन्ति ब्रह्माण्डे प्रभवन्ति पुनः पुनः ।
न मे भक्ताः प्रणश्यन्ति निःशङ्काश्च निरापदाः ॥

डर किस बात का ! मेरा भक्त कभी भी नष्ट नहीं होता । सब कुछ चला जायगा, पर मेरा भक्त निःशङ्क एवं निरापद बना रहेगा । मत डर ! मत डर ! मत डर !

[२]

मत डर

मैं सत्य कह रहा हूँ---जो मेरा नाम लेते हैं, पाषाण-काष्ठसदृश होने पर भी मैं उन्हें मृत्युकाल में अभीष्ट प्रदान करता हूँ। नाम ले, अविराम नाम ले-- मैं सब भार ग्रहण करूँगा। तू एकदम निश्चिन्त हो जायगा। आ, संसार-पीड़ित, साधन-भजनहीन! आ, संतप्त, तृषित, भोगलुब्ध! दौड़ आ, आ। रोग-शोक-यन्त्रणा से व्याकुल, आ! बालक, वृद्ध, युवक, युवती---सब आओ, आओ। पापी-पुण्यवान्, ब्राह्मण-चाण्डाल! आओ, आओ। मूर्ख-ज्ञानी, धनवान्-निर्धन---सब मेरा नाम लो, नाम लो, नाम लो। तुम्हारे सब दुःख दूर होंगे, तुम सब आनन्द सागर में डूब जाओगे।

नस-नस रक्त-प्रवाह में होय नाम-धुनि नित्य।
राम-नाम अङ्कित रहें अस्थि-अस्थि में सत्य॥

'नस-नस में रक्तप्रवाह के साथ नाम-ध्वनि संचार करो। हड्डी-हड्डी में राम-नाम-महावाणी अङ्कित हो जाय।'

जितना ले सकते हो, नाम लो; जितना सुन सकते हो, नाम सुनो; मेरा चैतन्यमय नाम सुनना, लेना व्यर्थ नहीं जाता; जितना नाम उतना ही आनन्द!

श्रद्धया हेलया नाम रटन्ति मम जन्तवः।
तेषां नाम सदा पार्थ वर्तते हृदये मम॥

'हे पार्थ ! श्रद्धा या अवहेलना से जो मेरा नाम रटते हैं; उन मनुष्यों के नाम मेरे हृदय में सदा वर्तमान रहते हैं ।'

येन केन प्रकारेण नाममात्रस्य जल्पकाः ।
श्रमं विनैव गच्छन्ति परे धाम्नि समादरात् ॥

'जिस-किसी भी तरह केवल नाममात्र का जप करने वाले बिना ही श्रम के बड़े आदर के साथ परमधाम को चले जाते हैं ।'

अरे प्रियतम ! मेरा नाम ले, निर्भय हो जायगा । मत डर, मत डर, मत डर !

[३]

मत डर

ओ प्रियतम ! रोग-शोक-अभाव में रात-दिन जल रहा है ? केवल रो रहा है ? अब मत रो ! मेरा नाम ले । तेरे सब दुःख दूर होंगे । संशय मत कर, चाहे भक्ति श्रद्धा न हो, अविराम नाम लेने से तू कृतार्थ हो जायगा ।

तन्नास्ति कर्मजं लोके वाग्जं मानसमेव वा ।
यन्न क्षपयते पापं कलौ गोविन्दकीर्तनम् ॥

'संसार में ऐसा कोई मन-वचन-कर्मजनित पाप नहीं, जो कलियुग में मेरे नाम-कीर्तन से नष्ट न हो जाय; नाम ले, नाम ले !'

उठते-बैठते, खाते-सोते, सुख में-दुःख में, अभाव में-बाहुल्य में, उपेक्षा से-श्रद्धा से, भक्ति से-अभक्ति से, कोला-

हल में-एकान्त में, स्वप्न में-जागरण में मेरा नाम ले। मैं प्रतिज्ञा करके कह रहा हूँ—तेरा सब भार मैंने ग्रहण कर लिया। तुझे कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं। मेरा प्रेम प्राप्त कर; तू सदा के लिए निश्चिन्त हो जायगा, तू नाममय हो जायगा। तेरी सात पीढ़ियाँ, जो बीत चुकी हैं, और चौदह पीढ़ियाँ जो आयेंगी, उनका उद्धार हो जायगा।

तस्मान्नामानि कौन्तेय भजस्व दृढमानसः।
नामयुक्तः प्रियोऽस्माकं नामयुक्तो भवार्जुन॥

—आदिपुराण

'अर्जुन! अतएव तू दृढ़ चित्त से नाम-भजन कर; नाम-युक्त, मेरे प्रिय! तू नामयुक्त हो। अरे, कलियुग में मैं नामरूप से आया हूँ।'

नाम ले, नाम ले। मत डर, मत डर, मत डर।

[४]

मत डर

अरे भक्त! तुझे कोई भय नहीं, तू केवल नाम ले। मैं भय का भय, भीषण का भीषण, सब विपत्तियों का नाश करने वाला सदा तेरी विपत्तियों का नाश करता हूँ और 'मैं तेरा'—कहकर जो मेरी शरण में आता है, उसे अभय-दान करना मेरा व्रत है। आकाश टूटकर पृथ्वी पर गिर पड़े, प्रलय की अग्नि जल उठे, साथ ही कोटि वज्रपात होने लगें, भयङ्कर महाझंझावात से विश्व-ब्रह्माण्ड काँप उठे,

सातों समुद्र उमड़ पड़ें; तथापि, तथापि, रे प्रियतम ! डर नहीं। मैं तुझे छाती से लगा कर तेरी रक्षा कर रहा हूँ। यह बात मत भूल—'मैं हूँ तेरा, अरे मैं हूँ तेरा।' मत डर।

अरे तापित, तृषित, क्षुभित, श्रान्त, क्लान्त, आत्म-विस्मृत सन्तान ! संसार-स्वप्न देखकर और हाहाकार न कर। संसार केवल स्वप्न है। सत्य केवल—एकमात्र मैं हूँ। मेरा नाम ले। नामानन्द-सागर में डूबकरे तू भी नाममय हो जा। अरे ! मेरे सिवा जगत् में कुछ है ही नहीं। पूर्ण में पूर्ण का प्रकाश, शान्त में शान्त का अवस्थान, आकाश में आकाश का उदय—मुझ में मैं ही हूँ। नाम लेते-लेते आखों के जल से आँखें धो डाल और एक बार देख, जगत् आनन्दमय हो उठा है !

ब्रह्माण्डानि विनश्यन्ति देवा इन्द्रादयस्तथा।
कल्याणभक्तियुक्तश्च मद्भक्तो न प्रणश्यति ॥

—ब्रह्मवैवर्तपुराण

'समस्त ब्रह्माण्ड तथा इन्द्रादि देवगण विनष्ट हो हैं, कल्याणभक्तियुक्त मेरा भक्त नष्ट नहीं होता।'

सत्वशुद्धिकरं नाम नाम ज्ञानप्रदं स्मृतम्।
मुमुक्षूणां मुक्तिप्रदं कामिनां सर्वकामदम् ॥

—सात्वत-तन्त्र

'नाम अन्तःकरण की शुद्धि करता है, नाम ज्ञान प्रदान करता है। नाम मुमुक्षु को मुक्ति—नाम से मुक्ति चाहने वालों को मुक्ति और कामना वालों को समस्त काम्य वस्तुओं का दान करता है।'

नाम ही परम तीर्थ है, नाम ही पुण्यप्रद क्षेत्र है; नाम ही परम देव है, नाम ही परम तपस्या है; नाम ही परम दान है, नाम ही परम क्रिया है: नाम ही परम धर्म है, नाम ही अर्थ है; नाम ही भक्त का काम है, मोक्ष भी केवल नाम ही है; नाम ही परम भक्ति है, नाम ही परम गति है; नाम ही परम जाप्य है और नाम ही सर्वश्रेष्ठ है।

अरे प्रियतम ! नाम लेने से तुझे वर्तमान एवं पर-काल की कोई भी चिन्ता नहीं करनी होगी। मैं तेरा मृत्यु-संसार-सागर से उद्धार करूँगा। नाम ले, नाम ले। मत डर, मत डर, मत डर !

[५]

मत डर

अरे प्रियतम ! तू क्यों डरता है ? अविराम नाम ले, तुझे कोई चिन्ता नहीं। मेरे ही डर से अग्नि प्रज्ज्वलित होती है, सूर्य ताप देता है; इन्द्र, वायु, मृत्यु अपना-अपना कार्य करते हैं। मेरे शरणागत भक्त की छाया स्पर्श करने की शक्ति किसी में भी नहीं है। अधिक क्या, नित्यदेह-धारी भक्त को मैं भी नाश नहीं कर पाता। मेरा सुदर्शन चक्र भक्त की सर्वदा रक्षा करता है। कोई बात न सुन; किसी के लिए मत सोच; निर्भय होकर उच्च कण्ठ से नाम ले। कलियुग में मैं नामरूप से आया हूँ। नाम ले। तेरा सब भार मैंने ले लिया। मत डर, मत डर, मत डर !

[६]

मत डर

अरे प्रियतम ! मैं तुझे कितना प्यार करता हूँ, जानता है ? तेरी आकांक्षा पूर्ण करके तुझे निराकांक्षी बनाने के लिए तू जो चाहता है, मैं वही बनकर तेरे पास आता हूँ। तूने कामिनी की चाह की, मैं नारी बनकर आ गया। ये सब तुच्छ कामनायें करके तू जन्म-जन्मान्तर केवल रोता है। इसलिए तो पुकार रहा हूँ, अरे लौट आ! लौट आ, अमृतसन्तान ! जड़ देह की ममता त्यागकर अपने सच्चिदानन्दमय आत्मस्वरूप में लौट आ। कैसे लौटेगा ? नाम-कीर्तन करते-करते।

नाम चिन्तामणिः कृष्णश्चैतन्यरसविग्रहः ।
पूर्णः शुद्धो नित्यमुक्तोऽभिन्नत्वान्नामनामिनोः ॥

—पद्मपुराण

'नाम ही चिन्तामणि स्वरूप चैतन्यरसविग्रह, पूर्ण शुद्ध, नित्यमुक्त स्वयं कृष्ण है, क्योंकि नाम और नामी में भेद नहीं।' समझा ? मुझमें और मेरे नाम में भेद नहीं; नाम का आश्रय लेना और मुझे प्राप्त करना एक ही बात है।

केवल नाम ले; तेरे रोग, शोक, दुःख, ज्वाला, अभाव —कुछ भी नहीं रहेगा। तू परमानन्दमय हो जायगा। मेरा पुण्य-नाम-संकीर्तन महापातक का नाश करता है, कामी को सर्वकाम और भक्त को प्रेम प्रदान करता है।

जो अनन्य-गतिहीन, भोगी, परद्रोही, ज्ञान-वैराग्य-

विहीन ब्रह्मचर्यादिवर्जित और समस्त धर्माचारशून्य हैं, वे एकमात्र मेरे नाम के द्वारा जिस गति को पाते हैं, उस गति को सभी धार्मिकगण नहीं पाते। अरे प्रियतम ! तू बड़ा ही मीठा नाम लेता है, मुझे बड़ा भला लगता है; इसीलिए मैं तेरे पास रहता हूँ और कहता हूँ--नाम ले, नाम ले।

अरे निश्चिन्त मन से उच्च कण्ठ से नाम ले।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

मत डर, मत डर, मत डर !

[७]

मत डर

प्रियतम ! ओ मेरे प्रियतम ! तेरे सब दुःख दूर करने के लिए मैं नाम-रूप में आया हूँ। नाम ले, तुझे अब कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी। मैं तेरे भीतर-बाहर आनन्द और प्रकाश भर दूँगा। मेरे सरस स्पर्श से अनु-क्षण तू पुलकित रहेगा। तेरी आँखें दूसरे जगत् को नहीं देखेंगी। केवल देखेंगी आनन्दमय मुझको।

मैं सत्य कह रहा हूँ, मेरा नाम मृत्यु-संजीवन है।

न भयं यमदूतानां न भयं रौरवादिकम्।
न भयं प्रेतराजस्य गोविन्देति च जल्पनात्॥

'नाम-कीर्तन से यमदूतों का भय, रौरवादि नरक का भय, यमदण्ड का भय नहीं रहेगा।' नाम ले, केवल नाम ले; नाम कीर्तन ही परम ज्ञान, परम तपस्या और परम

तत्व है। कोटि जन्म की साधना द्वारा प्राप्त परम पद भी नाम-कीर्तनकारी अनायास ही पाता है।

वह देख, सारे जगत् में दुःख की आग धू-धू करके जल उठी है। आ! आ! तू अब देर मत कर। नामामृतसागर में डुबकी लगाकर निर्भय होकर परमानन्द से मेरे हृदय में सदा के लिए विराज।

मत डर, मत डर, मत डर!

[८]

मत डर

अरे अपने को भूलने वाले मेरे आनन्द के लाल! तू पागल की तरह कहाँ दौड़ रहा है? लौट आ, लौट आ— अपने आनन्द-साम्राज्य में! यहाँ रोग, शोक, दुःख, ज्वाला यन्त्रणा, अभाव—कुछ भी नहीं है। है केवल आनन्द, परमानन्द। लौटने का उपाय भी अति सहज, सरल, सुगम—केवल नाम-कीर्तन। नाम-रूपी मुझमें अनन्य भाव से आश्रय ले। फिर तुझे कुछ भी चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी! मैं सब कर दूंगा। और देख, नाम में भक्ति-श्रद्धा की अपेक्षा नहीं है। जिस-किसी प्रकार मेरा नाम-श्रवण या कीर्तन करने से तू कृतार्थ होगा।

सदाचारी का क्या कहना, दुराचारी भी मेरे नाम-भजन से सालोक्य मुक्ति प्राप्त करता है।

मदुक्तं सत्यमेतत्तु वाक्यं मे श्रृणुताधुना।
सकृदुच्चार्य मन्नाम मे तुल्यो जायते नरः॥

'वर्तमान में मेरा यह सत्य-वाक्य श्रवण कर–मानव, एक बार मेरा नाम लेने से ही मेरे तुल्य हो जाता है।'

नाम-कल्पतरु-मूल से भोग-मोक्ष–जो भी चाहता है, उसे वही मिलता है। सतत मेरे नाम-कीर्तन से भक्त मुझ में ही लीन हो जाता है। नाम ही मैं, मैं ही नाम हूँ!

इस कलिकाल में नाम-संकीर्तन ही प्रेमलाभ करने का परम उपाय है। आ, आ! रे तापित, तृषित, क्षुभित अमृत सन्तान! नाम लेते-लेते मृत्युलोक के उस पार आ। प्रेमभक्ति-लाभ करके मेरा हो जा।

मत डर, मत डर, मत डर!

[६]

मत डर

इसीसे तो पुकार रहा हूँ––प्रियतम! त्रिताप की ज्वाला से बहुत जल रहा है! जन्म-जन्मान्तर रोते-रोते शेष हो गया! इसीलिए बुला रहा हूँ–आ, आ, आ रे अनन्त के लाल! मेरे हृदय में आ जा; नाम ले। नित्य नूतन विभीषिका देखकर सिहर उठा है? न, न, डरना नहीं।

जगतः प्रलये प्राप्ते नष्टे न कमलोद्भवे।
मद्भक्ता नैव नश्यन्ति स्वेच्छाविग्रहधारिणः॥
—सौरपुराण

'जगत् के प्रलय होने पर, ब्रह्मा के नाश होने पर भी, मुझ लीला-विग्रहधारी के भक्त नष्ट नहीं होते।'

नाम और मैं भिन्न नहीं हैं। नाम लेना और मेरे साथ-साथ विचरण करना एक ही बात है। अविराम नाम ले। रोग, शोक, दुःख, दैन्य--सब आनन्द-रूप धारण करके तेरे पास नाचते रहेंगे। तू आनन्द के महाप्लावन से नश्वर विश्व में निश्चिन्त हो जायगा। तू सर्वत्र मुझको आनन्द-मय ही देखेगा।

सहज, सरल, सुगम पथ है---नाम-संकीर्तन। मेरे नाम की प्रभा वेद-वेदान्त की पारगामिनी है। जो सर्वदा नाम लेते हैं, वे त्रिजगत् में पूज्य होते हैं। उनकी कृपा से भी कितने पापी-तापीगण का उद्धार हो जाता है।

अब और अवहेलना न कर; समय जा रहा है। नाम ले, अखण्ड नाम लेने का अभ्यास कर। जब तक एक शब्द भी उच्चारण करने की शक्ति रहे, तब तक नाम लेना मत छोड़। शुचि-अशुचि---कुछ भी देखने की जरूरत नहीं है। भक्ति-श्रद्धा हो, न हो, प्रतिक्षण नाम ले। नाम से ही प्रेम लाभ होगा। नाम-जप के द्वारा ही मेरा तुझे साक्षात् प्राप्त होगा। नाम ले, नाम ले, नाम ले।

मत डर, मत डर, मत डर!

[१०]

मत डर

अरे आनन्द के लाल! तुझे कोई भय नहीं है। अविराम नाम ले, सब दुःख दूर होंगे। मेरे भक्तों को

कहीं भी भय नहीं रहता। उन लोगों को जन्म-मृत्यु, जरा-व्याधि का भय भी नहीं रहता।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र या अन्य जाति के लोग भी भक्ति के द्वारा पवित्र होकर परम पद प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। भक्त मेरे प्राण का भी प्राण, मन का मन, सर्वस्व का सर्वस्व है। प्राण से प्रियतर! तू अनुक्षण नाम लेकर दुर्लभ प्रेमभक्ति प्राप्त करके कृतार्थ होगा।

नाहं वेदैर्न तपसा नेज्यया नापि तीर्थतः।
सन्तुष्यामि द्विजश्रेष्ठ यथा नाम्नां प्रकीर्तनात ॥
गानेन गुणनाम्नोर्मे मयि सायुज्यमाप्नुयात् ॥

'मेरा नाम-संकीर्तन करने से मैं जैसा सन्तुष्ट होता हूं, वैसा निखिल वेदाध्ययन, तपस्या तथा यज्ञ-तीर्थादि द्वारा सन्तुष्ट नहीं होता। नाम-गुण-कीर्तन के द्वारा भक्त मेरा सायुज्य—(मेरे साथ अभेदभाव) प्राप्त करता है।'

साधुओं के परित्राण, दुष्कृतकारियों के विनाश एवं धर्म की संस्थापना के लिए ही मैं नाम-रूप में अवतीर्ण हुआ हूँ। नाम ही मैं, मैं ही नाम हूँ। नाम और मुझमें कोई भिन्नता नहीं है। नाम ले, केवल नाम ले। ऐसा करने से व्यक्त—तेरे इष्ट रूप में, अव्यक्त—जगद्रूप में एकमात्र मैं ही हूं। यह प्रत्यक्ष कर सकेगा। मेरे नाम का स्मरण, कीर्तन, श्रवण, लिखन, दर्शन, किंवा धारण करने से मैं अखिल इष्ट दान कर देता हूँ।

आओ, आओ, अरे पथभ्रान्त, श्रान्त, क्लान्त पथिको! आओ, आओ; अरे रोगी, शोकी, पापी, तापी, ! आओ, आओ, मूर्ख-विद्वान्, ब्राह्मण-चाण्डाल ! आओ, आओ, बालक-वृद्ध, युवक-युवती–सब मेरे नाम की शान्त शीतल छाया में दौड़कर चले आओ। तुम लोगों की सारी व्यथा दूरकर मैं तुम्हें हृदय में रक्खूँगा। निद्रा में, स्वप्न-जागरण में, जन्म-मरण में, मेरी गोद में तुम परमानन्द से खेलोगे। नाम लो, नाम लो! तुम सब–
मत डरो, मत डरो, मत डरो!

[११]

मत डर

प्यारे! आ, आ, मेरे पास आ। देख! एक बार नहीं, युग-युगान्तर से पुकारता आ रहा हूं–आ, आ। उपनिषद्, रामायण, महाभारत एवं पुराण के द्वारा पुकार रहा हूं। साधु-सन्त-महापुरुष के रूप से पुकार रहा हूँ। जन्म-जन्म अनुक्षण स्वयं आत्मा के आत्मारूप से पुकार रहा हूँ। आ, आ। अपना दृष्टि-भ्रम दूर करके देख तो सही–यह सारा दृश्य-जाल मैं ही हूँ।

तूने इस संसार में रोग-शोक-अभाव आदि कितने ताप भोग किये हैं। आहा तापित! आ, आ! यही तो मैं, यही तो मेरा खुला हुआ विशाल वक्ष तुझे हृदय में लुकाकर तेरे सब ताप दूर कर देगा।

मेरे पास कोई भी ताप फटकने तक नहीं पाता। यहाँ प्राण शीतल करने वाले उजाले से सब भरा है। वेणु-वीणा, मुरज-मुरली की ध्वनि से यह स्थान नित्य मुखरित है। आकाश से सतत झरझर सुधाधारा बह रही है। यहाँ का सब कुछ आनन्द से निर्मित है। यहाँ आनन्द मूर्तिमान होकर नृत्य कर रहा है। दौड़ आ, देखते ही बनेगा। कैसे आयेगा? नाम और मैं पृथक् नहीं हूँ। जिह्वा पर, श्वास में, मनमें, प्राण में नाम रखकर नाम में डूबा रह; ऐसा करने से मेरे वक्षःस्थल पर तेरी सारी ज्वालायें दूर हो जायँगी।

बहु-दर्शन से डर गया है? भय नहीं है। सभी मैं हूँ। अरे लाल! अरे प्रियतम! नाम ले, नाम ले, नाम ले।

मत डर, मत डर, मत डर!

[१२]

मत डर

अरे प्रिययम! आत्मविस्मृत सन्तान! अभयदान करना ही तो मेरा ब्रत है। कोई भी क्यों न हो; यदि वह शरणागत है तो मैं उसे हृदय में बैठाकर अपना बना लेता हूँ। तू केवल एक बार--'मैं तेरा हूँ' कहकर जीवन-मरण में निश्चिन्त हो जा।

जिस दिन गुरु बनकर मैंने नाम दिया है, उस दिन तो मैंने आत्मदान ही कर दिया। मुझे ही तो पाया था, ओ प्रिय! कण्ठहार कण्ठ में ही है! बाहर मत दौड़; तेरा हृदय-कमल ही मेरा सुकोमल आसन है। मैं वहाँ बैठकर नित्यप्रति पुकार रहा हूं—आ, लौट आ; अपने घर लौट आ। सुन, प्रियतम! नाम ही भक्ति है, नाम ही भाव है, नाम ही प्रेम है; मैं ही नाम हूँ, नाम ही मैं हूँ; नाम-रूप में तूने मुझे ही पाया है। अब डर काहे का। नाम ही ध्येय है; नाम ही ध्यान है; नाम ही साध्य है, नाम ही साधन है; नाम ही उपाय है, नाम ही प्राप्य है; नाम ही प्रापक है, नाम ही पूज्य है, नाम ही पूजा है और नाम ही उपचार है। अरे देख, पुलक-माला-भूषित विगलित-प्राण भक्त के नेत्रों का जल मुझे बहुत प्रिय है। तू नेत्रों के जल से नाम-उपचार में पूजा करता और नाम लेता रह। नाम लेता रह।

मत डर, मत डर, मत डर!